

Stamps to earn Foreign Exchange

+

*366. **Shri Yashpal Singh:**
Shri Sidheshwar Prasad:
Shri Rishang Keishing:

Will the Minister of Communications be pleased to state:

(a) whether Government's attention has been drawn to an article published in the *Statesman* of the 21st May, 1966, in which lethargy of the P. & T. Department in the matter of issue of stamps for earning foreign exchange has been alleged; and

(b) if so, Government's reaction thereto?

The Minister of State in the Departments of Parliamentary Affairs and Communications (Shri Jaganatha Rao):

(a) Yes Sir.

(b) The Government is already alive to the situation. For want of adequate equipment for printing of stamps in multi-colour in the Nasik Security Press and the tight foreign exchange position, the number of special stamps to be issued in a year has to be restricted. For the same reason it has also not been possible to bring out large size multi-coloured stamps depicting the flora, fauna, architecture and beauty spots of India.

श्री यशपाल सिंह : इस डिपार्टमेंट में सभी लोटस ईटर्ज हैं या कोई एक्टिव भी है ? मैं चार घंटे तक ऋषिकेश पोस्ट आफिस में खड़ा रहा लेकिन मुझे पंद्रह पैसे वाला लिफाफा नहीं मिल सका । मैं जानना चाहता हूँ कि यह जो स्टेट्समैन में निकला है इसके लिए किसको जिम्मेदार ठहराया गया है क्या किसी के खिलाफ कोई एक्शन भी लिया गया है या नहीं लिया गया है ?

संसद्-कार्य तथा संचार मंत्री (श्री सत्य नारायण सिंह) : कमेमोरेटिव स्टैम्प्स के बारे में पूछ रहे हैं या प्रॉडिनरी स्टैम्प्स के बारे में ?

श्री यशपाल सिंह : स्टेट्समैन में जो आया है फारेन एक्सचेंज कमाने के लिए उसके लिए किसको जिम्मेदार ठहराया गया है, कौन दोषी पाया गया है और उसके खिलाफ क्या एक्शन लिया गया है ?

श्री सत्य नारायण सिंह : स्टेट्समैन में जो आया है उसको हमने देखा है । उसमें किसी की कोई जिम्मेवारी नहीं है । हम लोग खुद चिंतित हैं और कोशिश कर रहे हैं कि जितनी अधिक से अधिक कमेमोरेटिव स्टैम्प्स हम निकाल सकें निकालें । इसमें हमारा फायदा ही है । देश और विदेश में हमारा नाम होता है और पैसा भी हमें मिलता है । लेकिन दो दिक्कत की बातें हैं । एक तो यह है कि यह हमारे डिपार्टमेंट का काम नहीं है । नासिक प्रेस में यह चीज छपती है । नासिक प्रेस वालों के पास इतना काम है कि वे और ज्यादा नहीं कर सकते हैं । हमने बहुत कोशिश की है लेकिन बारह से ज्यादा हम अभी तक नहीं करवा पाए हैं एक साल में । पिछले दो सालों में हमने बड़ी मिन्नत खुशामद फाइनेंस मिनिस्ट्री को करके हम बड़ी मुश्किल से इस नम्बर को एक दो ही बढ़ा पाये हैं । बड़े बड़े नेताओं की जितनी हम निकाल सकते थे निकालने की कोशिश की है । मुल्क बहुत बड़ा है और कितने ही बड़े बड़े लोग मर गए हैं । सोशल रिफार्मर बड़े बड़े साधु-सन्त आदि की तादाद भी उसी तरह से हर प्रान्त में बढ़ी है । बड़े बड़े आदमी हमारे इधर के साथी और अपोजीशन वाले भी हमको हमेशा लिखते रहते हैं कि फलां फलां की निकलें । हम कोशिश में हैं कि उन सब की निकलें । लेकिन आप देखें कि कुछ बड़े बड़े लोग ही चुके हैं जैसे सरदार वल्लभ भाई पटेल और श्री सी० आर० दास जैसे और उनको मरे हुए इतने दिन हो गए हैं लेकिन उनके स्टैम्प भी हमने पिछले दो सालों में निकाले हैं । हमारी बड़ी कोशिश है कि फ्लोरा और फौना के भी निकलें । हम पिछले साल जर्मनी गए थे । वहां हमने मल्टी कलंड

मशीन देखी थी जो बहुत सुन्दर थी। वह कमेमोरेटिव स्टेम्पस निकालती थी। हमारी बड़ी कोशिश है कि वह मशीन हमको मिल जाए और उसकी मदद से हम भी यहां निकालें आपकी तरह से हम भी चिंतित हैं लेकिन जितना अधिक हो सकता है हम निकालने की कोशिश कर रहे हैं।

श्री यशपाल सिंह : नासिक प्रेस के ऊपर इतना भार है और काम वहां सब नहीं हो पा रहा है तो दूसरा कोई प्रेस आप क्यों कायम नहीं करते हैं ?

श्री सत्य नारायण सिंह : स्टेम्प छापने की बात ऐसी है कि आर्डिनरी प्रेस में ये नहीं छप सकते हैं जहां कहीं चाहें वहां नहीं इनको छापने के लिए भेज सकते हैं। यह बड़ी जवाब देही की चीज है और पैसे का सवाल है। सिक्वोरिटी प्रेस दूसरा हो तो यह हो सकता है। वह हम करें। लेकिन आप देखें कि दिल्ली के किसी प्रेस में अगर आप चाहते हैं कि इनको छापने के लिए भेज दिया जाए जहां अखबार छपते हैं वहां भेज दिया जाए तो वह नहीं हो सकता है।

श्री भागवत झा आज़ाद : मंत्री महोदय ने कहा है कि हम बड़े जागरूक हैं लेकिन समय की कठिनाई है फारेन एक्सचेंज की कठिनाई है, बिल्डिंग की कठिनाई है, प्रेस की कठिनाई है, जर्मनी में बहुत अच्छी मशीन है वह हमारे पास नहीं है इसलिए कठिनाई है और इन कठिनाइयों की वजह से हम कुछ नहीं कर पा रहे हैं। मैं जानना चाहता हूँ कि और इनके सामने इतनी कठिनाइयां हैं और लिस्ट लम्बी है तो इनके पास अगर इस देश के प्रथम सेनानी मञ्जुहरे-ले-हक जैसे व्यक्ति का नाम आता है तो उनके नाम को पैडिंग लिस्ट में रखने के बजाय बिल्कुल ही उसकी छतनी क्यों ये कर दे हैं ? इसका क्या कारण है ?

श्री सत्य नारायण सिंह : माननीय सदस्य को मालूम होना चाहिये कि इसका फैसला फिल्टली कमेटी जो हमारी है और जिसमें एक्सपर्ट हैं और मेम्बर पार्लियामेंट भी हैं और जो एडवाइजरी कमेटी है वही करती है। आम तौर पर हम उसके काम में इंटरफीयर नहीं करते हैं। जितने भी नाम हमारे पास आते हैं उनको हम उसके पास भेज देते हैं। माननीय सदस्य पिछले दो सालों की लिस्ट को देखें तो उनको पता चलेगा कि नम्बर बारह ही है। उसको बढ़ाने की तकत होती तो हम बढ़ाते। बहुत बड़े बड़े लोगों के नाम हमारे सामने थे। और भी जो छूटे-लोग थे हम चाहते थे कि उनके भी निकलें। हमारी बड़ी कोशिश थी कि नम्बर बड़े और जितने बड़े बड़े लोग मर गए हैं उन सब के हम निकाल दे लेकिन जो कठिनाई है वह आपके सामने है।

श्री क० ना० तिवारी : मंत्री महोदय ने कहा है कि बहुत से लोग इधर मरे हैं और और मरते जाते हैं इसलिए बड़ी दिक्कत हो रही है। सरदार भगत सिंह का नाम दिये हुए काफी दिन हो गए हैं। इनके बारे में मैंने लिखा भी था और कहा था कि उनका स्टेम्प निकलना चाहिये। उनका नाम कमेटी के सामने गया भी था और वहाँ से वापिस आ भी गया था। मैं जानना चाहता हूँ कि क्या कारण है कि उनका स्मारक टिकट नहीं निकल रहा है और कब तक वह निकलेगा, क्या आपके पास समय नहीं है या धन नहीं है ? क्या कठिनाई है उनका स्मारक टिकट निकालने के रास्ते में ?

श्री सत्य नारायण सिंह : यह मुझाब कमेटी के पास भेज दिया गया है जो कि इस पर गौर करेगी।

श्री प्रकाशवीर झास्त्री : मैं यह जानना चाहता हूँ कि पीछे महात्मा गांधी, श्री जवाहरलाल नेहरू और श्री रवीन्द्रनाथ ठाकुर की स्मृति में जो विशेष डाक-टिकट जारी की

गई उन से संचार मंत्रालय को कितना विदेशी मुद्रा का लाभ हुआ ? उस अनुभव को ध्यान में रखते हुए क्या पीछे कोई ऐसा मुद्राव आया था कि भारत-पाकिस्तान संघर्ष में होने वाले शहीदों की स्मृति में कोई विशेष डाक-टिकट निकाला जाये ? यदि हां, तो उस विचार को क्यों स्थगित कर दिया गया ?

श्री सत्य नारायण सिंह : इस समय मैं यह नहीं बता सकता हूँ कि एक एक प्रादमी के स्टैम्प से कितनी विदेशी मुद्रा प्राप्त हुई । सब तरह के जो स्टैम्प बाहर भेजे गए उनसे 150 हजार रुपये का फ़ारेन एक्सचेंज आया है । मेरे पास इस वक्त अलग अलग स्टैम्प से मिलने वाले फ़ारेन एक्सचेंज का ब्यौरा नहीं है । शहीदों की स्मृति में विशेष डाक-टिकट निकालने के विषय में एक मुद्राव आया है जिसको देखा जा रहा है । जिन व्यक्तियों के स्टैम्प निकाले गए हैं वे भी तो शहीद हैं, वे सब से बड़े शहीद हैं ।

Shri Alvares : Is it a fact that the number of persons whose memory is awaiting commemoration is beyond the potential of the Security Press to meet?

Mr. Speaker : That is what he has said.

Shri Hari Vishnu Kamath : Is it a fact that some time ago when Shri Satya Narayan Sinha was not the Minister of Communications, after years of pressure in Parliament and outside, the Government agreed to and actually did bring out a special stamp in honour of Netaji Subhas Chandra Bose which brought in its wake an enormous demand from the countries of Asia and also Europe, but Government did not meet the demand which could have brought a lot of foreign exchange, and if so, the reasons therefor?

Shri D. C. Sharma : He is still alive. How can you bring out a commemorative stamp?

Shri Hari Vishnu Kamath : Look into the matter.

1244(Aj) LSD-2.

Shri Satya Narayan Sinha : We have issued that stamp, but we will look into the suggestion of the hon. Member.

Education Programme for Fourth Plan

+
*368. **Shri H. N. Mukerjee :**
Shrimati Maimoona Sultan :

Will the Minister of Education be pleased to state:

(a) whether the education programme for the Fourth Plan has been finalised;

(b) if so, the main features thereof; and

(c) the total outlay for education in the Fourth Plan?

The Minister of Education (Shri M. C. Chagla) : (a) to (c). A statement is laid on the Table of the House.

STATEMENT

An educational plan involving an outlay of Rs. 1260 crores as approved by the National Development Council in its meeting held in September 1965 has been formulated. Since the question of the final outlay for education is still under the consideration of the Planning Commission, the plan might need revision.

2. The main features of the plan are as follows:

- (a) to provide free and universal primary education, eliminate stagnation and wastage and introduce work orientation as an integral part of educational processes;
- (b) to accelerate girls' education and remove the present disparity between enrolment of boys and enrolment of girls;
- (c) to emphasise science education vocational education and diversified courses at the secondary stage;
- (d) to improve the standard and quality of education at all stages, particularly at the university stage by restricting admissions;